मॉड्यूल – मप्र में पूर्व प्राथमिक शिक्षा में नेतृत्व की शुरुआत

चरण – 1

भाग – 1
पूर्व प्राथमिक शिक्षा को समझना

भाग – 2
पूर्व प्राथमिक शिक्षा की चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना

चरण – 2

भाग – 1
प्रारंभिक साक्षरता एवं गणित की कक्षा संचालन हेतु प्रधानाध्यापक की भूमिका को चिन्हित करना

भाग – 2
पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन के उद्देश्य को समझना

शीर्षक :
मप्र में पूर्व प्राथमिक शिक्षा में नेतृत्व की शुरुआत (चरण - 1 एवं चरण - 2)

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग (चरण 1) में नेतृत्वकर्ता –

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता को चिन्हित कर सकेंगे।
2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की प्रमुख चुनौतियों और अवसरों को पहचान सकेंगे।

मॉड्यूल के इस भाग (चरण 2) में नेतृत्वकर्ता –

1. प्रारंभिक साक्षरता एवं गणित की कक्षा संचालन हेतु प्रधानाध्यापक की भूमिका को चिन्हित कर सकेंगे।
2. प्रधानाध्यापक पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन के उद्देश्य को समझ सकेंगे।

सत्र परिचय

जैसा कि हम सभी जानते हैं, आज भारत में हमारे पास बड़ी संख्या में बच्चे हैं जो पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी हैं। वर्तमान समय में अधिकांश बच्चों तक ईसीसीई की भी पहुँच नहीं है। ऐसे में इन सभी बच्चों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन होता है और आगे चलकर बच्चों का एक बड़ा हिस्सा प्रथम कक्षा में प्रवेश पाने के कुछ हफ्तों बाद ही अपने सहपाठियों से पिछड़ जाता है। जिसका प्रमुख कारण उनके घरों में शिक्षा (साक्षरता और संख्या ज्ञान) के वातावरण का नहीं होना है। जबकि किसी भी बच्चे के जीवन काल में प्रारम्भिक वर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं क्योंकि इस समय विकास की दर किसी अन्य जीवन काल की तुलना में अधिक तेज होती है।

कई अध्ययन यह बताते हैं कि वर्तमान में बड़े पैमाने पर बच्चे नहीं सीख रहे हैं और यह एक बड़ा संकट है । इसी तरह राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वे 2017 भी बताता है कि भारत में कक्षा 3 में पढ़ने वाले औसतन 66.7 प्रतिशत बच्चे ही भाषा विषय में अपने स्तर पर हैं जबकि मध्यप्रदेश में औसत 69.1 प्रतिशत बच्चे अपने स्तर पर हैं। परन्तु यदि थोड़ा गहराई से देखें तो मध्यप्रदेश में लगभग 48 प्रतिशत बच्चों में पढ़कर समझने के कौशल का अभाव है। यह आँकड़ा सीधे इस ओर निशाना करता है कि हमें बच्चों के साथ बुनियादी साक्षरता पर काम करने की कितनी जरूरत है।

चलिए, अब बात करते हैं कक्षा 3 के गणित विषय की। तो गणित विषय को औसतन 61.5 प्रतिशत बच्चे राष्ट्रीय स्तर पर और मध्यप्रदेश में 61.5 प्रतिशत बच्चे ही हल कर पाते हैं। तो इसका मतलब यह हुआ कि बच्चों का एक बड़ा समूह बुनियादी संख्या ज्ञान में भी कमजोर है। इसलिए इस संकट से निपटने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जहाँ प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को सीखने की नींव के रूप में सभी के समक्ष प्रस्तुत किया है वहीं बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान को सीखने के लिए एक तात्कालिक आवश्यकता और पूर्व शर्त बताया है । यह नीति वर्तमान की 10 + 2 (6 से 18 वर्ष) वाली स्कूली व्यवस्था को 5 + 3 + 3 + 4 (3 से 18 वर्ष) के सभी बच्चों के लिए पाठ्यचर्या और शिक्षण - शास्त्रीय आधार पर एक नयी व्यवस्था में पुनर्गठित करने की बात करती है ।

चलिए खुद को जाँचें – (सही जवाब पर ( ) निशान लगाएँ)

1. वह कौन सी उम्र है जिसमें बच्चों में विकास की दर सबसे अधिक होती है ?

   1) 0 से 18 वर्ष

   2) 0 - 14 वर्ष

   3) 0 - 8 वर्ष

   4) 0 - 12 वर्ष

2. प्रारम्भिक शिक्षा में कौन सी कक्षा को शामिल किया जाता है?

   1) कक्षा तीन से पहले की कक्षाएं

   2) कक्षा दो से पहले की कक्षाएं

   3) कक्षा चार से पहले की कक्षाएं

   4) कक्षा एक से पहले की कक्षाएं

3. बुनियादी शिक्षा देने का मुख्य कारण क्या है?

   1) पढ़ना और लिखना

   2) संज्ञानात्मक विकास

   3) बच्चे का सर्वांगीण विकास

   4) शारीरिक विकास

4. बुनियादी भाषा विकास को बढ़ाने के लिए कौन सा कदम महत्त्वपूर्ण नहीं है?

   1) कक्षा की दीवारों का उपयोग करना

   2) प्रिंट समृद्ध वातावरण बनाना

   3) अनुभव साझा करना

   4) बच्चे के घर की भाषा को जगह न देना

5. बुनियादी गणितीय कौशलों को बढ़ाने के लिए कौन सा कदम महत्त्वपूर्ण नहीं है?

   1) गणित को दैनिक जीवन के साथ जोड़ना

   2) बिना अवधारणा समझाए सवालों को हल करवाना

   3) गणित को अन्य विषयों के साथ जोड़ना

   4) बच्चों की गलतियों को समझना और शिक्षण में उस अनुसार बदलाव करना

6. सीखने की नींव वाली स्टेज कौन सी है?

1) फाउन्डेशनल स्टेज

2) सेकेन्ड्री स्टेज

3) प्रिपरेटरी स्टेज

4) मिडिल स्टेज

7. नीचे दिए सिद्धांतों में यह भाषा शिक्षण का सिद्धांत नहीं है?

1) रट कर बोलना / बार-बार दोहराना

2) सुनकर समझना

3) प्रिपरेटरी समझना

4) लिखित अभिव्यक्ति

8. इनमें से क्या गणित की दक्षता नहीं है?

1) संख्याओं की समझ

2) जोड़ और घटाव

3) इबारती सवाल का श्रुत लेख

4) लम्बाई और वजन

9. ईसीसीई का पूरा नाम क्या है?

1) आरंभिक बालविकास और शिक्षा

2) बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा

3) बच्चों के लिए बाल्यावस्था और शिक्षा

4) प्रत्येक बच्चा देखभाल और शिक्षा

10. एफएलएन का पूरा नाम क्या है?

1) साक्षरता और संख्या ज्ञान की समझ

2) शुरुआती साक्षरता और संख्या ज्ञान

3) आरंभिक साक्षरता और संख्या ज्ञान

4) बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान

कीवर्ड्स - ईसीसीई (ECCE), पूर्व प्राथमिक शिक्षा, एफ़एलएन (FLN), बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान।

भाग - 1 :
पूर्व प्राथमिक शिक्षा को समझना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में सभी प्रतिभागी –

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य को समझ सकेंगे ।
2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा क्या है, इसे समझ सकेंगे ।

परिचय

1947 में मिली आज़ादी के बाद भी भारत में रहने वाले हर वह माता-पिता जिसे हम आमजन कहते हैं, उनके मन में उनके बच्चे के प्रारंभिक वर्षों के विकास के बारे में आज भी अनेक अनसुलझे प्रश्न हैं जैसे-उसे अच्छा स्वास्थ्य, उचित पोषण, आचार-विचार, उचित वातावरण एवं बेहतरीन शिक्षा कैसे प्राप्त हो सकेगी? क्योंकि, अधिकांश परिवारों में पढ़ने-लिखने का माहौल नहीं है और लगभग सभी अभिभावक अपने परिवार के भरण-पोषण में व्यस्त रहते हैं। इसलिए, पूर्व प्राथमिक शिक्षा ही एकमात्र विकल्प है जहाँ बच्चों को स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा मिल सकती है।

इसी कड़ी में, जब हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा की बात करते हैं तो आज़ादी के बाद पहली बार भारत में समय की मांग के अनुकूल शिक्षा में होने वाले परिवर्तन, शिक्षा में सुधार एवं राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की सथापना करने के उद्देश्य से 14 जुलाई 1964 को, राष्ट्रीय शिक्षा स्तर पर **'कोठारी आयोग'** का गठन किया गया था। जिसमें पहली बार पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उल्लेख किया था।

इस आयोग ने सरकार की शिक्षा संबंधी नीतियों, शिक्षा के राष्ट्रीय स्वरूप एवं शिक्षा के हर क्षेत्र में विकास की संभावनाओं पर विचार कर अपनी सलाह सरकार को दी। इस सलाह में आयोग के सुझाव एवं सिफारिश के भाग दो शिक्षा की संरचना और स्तर में विद्यालय शिक्षा की नवीन संरचना में 4 या 5 वर्ष की पूर्व विद्यालय शिक्षा को संरचना का हिस्सा बनाया। इसी तरह विद्यालय की शिक्षा की नवीन संरचना के संबंध में सुझाव दिया गया है कि प्राथमिक शिक्षा की अवधि 7-8 वर्ष की रखी जाए। इसे निम्न दो भागों में विभाजित किया जाये - (i) 4 या 5 वर्ष का निम्न प्राथमिक स्तर, (i i) 3 या 2 वर्ष का उच्च प्राथमिक स्तर। आयोग की सिफारिश के बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के भाग 4 में ई सी सी ई (पूर्व बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा) की आवश्यकता के बारे में बताया गया। हालाँकि इसके पूर्व ही मिस मांटेसरी के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए 1954 में मध्यप्रदेश में 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण केन्द्र, जबलपुर' की स्थापना की गई और बच्चों की आवश्यकता को समझते हुए प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित करने का काम शुरू किया। इतना ही नहीं इस केन्द्र के द्वारा पूर्व प्राथमिक शिक्षा का संचालन भी किया जाना सुनिश्चित कर दिया था। मारिया मांटेसरी के अनुसार प्रत्येक बालक अपने आप में विशिष्ट है और उस बालक के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए शिक्षक को शिक्षण शास्त्र की समझ होने के साथ ही कक्षा में बाल केन्द्रित वातावरण के निर्माण और मूल्याकंन के आनंददायी और रोचक तरीकों की पहचान भी होना चाहिए।

इसी तरह पूर्व प्राथमिक शिक्षा के संबंध में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की आवश्यकता, अवधारणा और क्रियान्वयन पर एक अध्याय रखा गया है। जबकि पूर्व प्राथमिक शिक्षा के मनोविज्ञान, सीखने के क्षेत्र और आकलन की प्रक्रिया को समझने की दृष्टि से आधार पत्र भी तैयार किया गया है। जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में 3 वर्ष के बच्चों को शिक्षा में शामिल कर प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) की एक मजबूत बुनियाद को शामिल किया है। साथ ही सम्पूर्ण भारत में इसके विस्तार के बारे में भी बताया है ।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 पृष्ठ 74–3.10.1 प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा

प्रारंभिक बाल्यावस्था स्तर, छः से आठ साल तक की उम्र का समय, बहुत ही संवेदनशील और निर्णायक होता है, जब जीवन भर के विकास के आधार और समस्त संभावनाओं के द्वार खुलते हैं। जैसा कि शोध से पता चलता है कि मस्तिष्क की संभावनाओं के पूर्ण विकास के लिहाज से ही इसे संवेदनशील कहा जाता है। बाद की प्रवृत्तियों, मूल्यों और ज्ञान की आकांक्षा की नींव भी इसी चरण में पड़ती है। अगर इस चरण में सहयोग न मिले या उपेक्षा बरती जाए तो इसके नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। कई बार यह परिणाम सुधारे भी नहीं जा सकते। शाला-पूर्व शिक्षा और देखभाल की यह मांग है कि छोटे-छोटे बच्चों की उचित देखभाल हो, उनके सर्वांगीण विकास के लिए पर्याप्त अवसर और अनुभव दिए जाएं। सर्वांगीण विकास में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक विकास एवं विद्यालय के लिए तैयारी शामिल है।

बच्चों में सीखने और अपने आसपास की दुनिया को समझने की स्वाभाविक इच्छा होती है। इसलिए शुरुआती वर्षों में अधिगम बच्चों की अभिरुचियों और प्राथमिकताओं के मुताबिक़ होना चाहिए और बच्चों के अनुभवों में संदर्भित होना चाहिए, न कि औपचारिक रूप से बनाया हुआ। बच्चों को समर्थ बनाने वाला माहौल वह होता है जो बच्चों को विविध प्रकार के अनुभवों की दिशा में प्रेरित कर सके, जो बच्चों को कुछ करने, खुलकर अपने-आपको अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान करे। साथ ही वह सामाजिक संबंधों में रचा बसा हो जिससे उन्हें स्नेह,संरक्षण और विश्वास की अनुभूति हो। खेलकूद, संगीत, गीत, कलाओं तथा अन्य गतिविधियाँ, जो स्थानीय सामग्री, कला और ज्ञान पर आधारित हों, साथ ही, बोलने, स्वयं को अभिव्यक्त करने, अनौपचारिक सम्पर्क-संवाद के अवसर आदि इस चरण में ज्ञान के आवश्यक अंग हैं। यह आवश्यक है कि शुरुआती वर्षों की शिक्षा में वही भाषा प्रयोग में लाई जाए जिससे बच्चा अपने परिवेश में परिचित हो, वहीं अगर कक्षा बहुभाषी और अनौपचारिक हो तो बच्चों की दूसरी भाषा (अंग्रेजी) की जल्द शुरुआत से बच्चे असहज नहीं होते। यह मदद कक्षा 1 से ही शुरू होने वाली उस भाषा को समझने में भी मिलेगी जिसके माध्यम से पढ़ाई होती है। क्योंकि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के कार्य-क्षेत्र में जो बच्चे आते हैं उनका समूह बड़ा ही विषमजातीय होता है। जिसमें शिशुओं से लेकर नर्सरी के विद्यार्थी होते हैं। यह महत्त्वपूर्ण है कि उनके लिए आयोजित की गई गतिविधियाँ और अनुभव विकासात्मक दृष्टिकोण से उपयुक्त हों।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- पृष्ठ 9-अध्याय 1-प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षाः सीखने की नींव

1.1 बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की अवस्था से पूर्व ही हो जाता है। बच्चों के मस्तिष्क के उचित विकास और शारीरिक वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए उसके आरंभिक 6 वर्षों को

महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वर्तमान समय में, विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित पृष्ठभूमि के करोड़ों बच्चों के लिए, गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध नहीं है। इसलिए ईसीसीई में निवेश करने से इसकी पहुँच देश के सभी बच्चों तक हो सकती है जिससे सभी बच्चों को शैक्षिक प्रणाली में भाग लेने और तरक्की करने के समान अवसर मिल सकेंगे। ईसीसीई संभवतया, समता स्थापित करने में सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है। प्रारंभिक बाल्यावस्था विकास, देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जल्द से जल्द, निश्चय ही वर्ष 2030 से पूर्व, उपलब्ध किया जाना चाहिए, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पहली कक्षा में प्रवेश पाने वाले सभी बच्चे स्कूली शिक्षा के लिए पूरी तरह से तैयार हों।

1.2 ईसीसीई में मुख्य रूप से लचीली, बहुआयामी, बहु-स्तरीय, खेल-आधारित, गतिविधि-आधारित, और खोज-आधारित शिक्षा को शामिल किया गया है। जैसे अक्षर, भाषा, संख्या, गिनती, रंग, आकार, इंडोर एवं आउटडोर खेल, पहेलियाँ और तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की कला, चित्रकला, पेंटिग, अन्य दृश्य कला, शिल्प, नाटक, कठपुतली, संगीत तथा अन्य गतिविधियों को शामिल करते हुए इसके साथ अन्य कार्य जैसे सामाजिक कार्य, मानवीय संवेदना, अच्छे व्यवहार, शिष्टाचार, नैतिकता, व्यक्तिगत और सार्वजनिक स्वच्छता, समूह में कार्य करना और आपसी सहयोग को विकसित करने पर भी ध्यान केन्द्रित किया गया है ईसीसीई का समग्र उद्देश्य बच्चों का शारीरिक-भौतिक विकास, संज्ञानात्मक विकास, समाज-संवेगात्मक-नैतिक विकास, संवाद के लिए प्रारंभिक भाषा, साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के विकास में अधिकतम परिणामों को प्राप्त करना है।

जैसा कि हमने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में रेखांकित पूर्व प्राथमिक शिक्षा की महत्त्वपूर्ण बातों को पढ़ा है। अब थोड़ा रुककर कुछ सवालों पर विचार करते हैं-

1. राष्ट्रीय स्तर के दो महत्वपूर्ण दस्तावेजों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में कही गई बातों में क्या समानता है? किन्हीं 5 प्रमुख समानताओं को लिखिए ।

.....

.....

.....

.....

2. क्या ईसीसीई समता स्थापित करने का सबसे शक्तिशाली माध्यम हो सकता है? यदि हाँ तो उसकी 3 प्रमुख बातों को लिखिए।

.....

.....

.....

3. पूर्व प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक शिक्षा के बीच क्या कोई महत्वपूर्ण संबंध है? यदि हाँ तो क्या ।

.....

.....

.....

चलिए सवालों के जवाब लिख लेने के बाद अब हम समझते हैं कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा किसे कहेंगे ? जैसा कि राष्ट्रीय स्तर के कई दस्तावेज दृढ़ता के साथ अपने दस्तावेज में बताते हैं कि जीवन के आरम्भिक वर्ष वृद्धि, विकास और सीखने की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस तरह से सभी बच्चों का यह अधिकार है कि उन्हें सर्वांगीण विकास एवं वृद्धि के वे सभी अवसर मिलें जिनसे उनमें निहित क्षमताओं का भरपूर विकास हो सके। यह बात उन बच्चों पर भी लागू होती है, जिनकी शारीरिक अक्षमताओं के कारण उनकी कुछ विशिष्ट आवश्यकताएँ होती हैं। 3 से 6 वर्ष की आयु के दौरान बच्चों की जिन सर्वांगीण क्षमताओं का विकास होता है, वे विद्यालय में समायोजन एवं उनके खुशहाल जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक होती हैं। यह औपचारिक शिक्षा का प्रथम चरण है जिसे हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा के नाम से जानते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षा आँगनवाड़ी, नर्सरी स्कूल, पूर्व-प्राथमिक विद्यालय, प्रीप्रेटरी स्कूल, किंडरगार्टन, मॉन्टेसरी स्कूल और सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पूर्व प्राथमिक अनुभाग में अलग-अलग स्वरूप में दी जा रही है ।

> भारत के संविधान में राज्य के नीति निदेशक तत्व में बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का उपबंध 46 वाँ संशोधन अधिनियम 2002 में इस संशोधन द्वारा राज्य अनुच्छेद 45 के स्थान पर नया अनुच्छेद रखा गया है। यह अनुच्छेद उपबंधित करता है कि राज्य 6 वर्ष की आयु के सभी बालकों के पूर्व बाल्य काल की देखरेख को शिक्षा के लिए अवसर प्रदान करने के लिए उपबंध करेगा।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का व्यापक लक्ष्य है। बच्चों का सर्वांगीण विकास और आजीवन सीखने हेतु मजबूत नींव डालना। साथ ही बच्चों को विद्यालय के लिए तैयार करना ।

संक्षेप में यदि हम ईसीसीई को समझना चाहते हैं तो यह अनौपचारिक शिक्षा है, जो कि बच्चे के जन्म से लेकर 6 वर्ष की आयु वर्ग के बालकों के स्वास्थ्य, संरक्षण, कुपोषण से बचाने का कार्यक्रम है। साथ ही यह बच्चों में सुनने-बोलने की कुशलताओं के विकास तथा भाषा एवं गणित की पूर्व तैयारी के लिए उनमें बौद्धिक, सृजनात्मक एवं शारीरिक विकास हेतु गतिविधियों से भरपूर एक संतुलित खेल आधारित कार्यक्रम है जो पढ़ने लिखने की तैयारी को महत्व देता है।

> बच्चों को समर्थ बनाने वाला माहौल वह होता है जो बच्चों को विविध प्रकार के अनुभवों की दिशा में प्रेरित कर सके, जो बच्चों को कुछ करने, खुलकर अपने-आपको अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान करे।
>
> **एन सी एफ 05**

एक नेतृत्वकर्ता को चाहिए कि वह बच्चों को उसके प्रारंभिक वर्षों में उपयुक्त शैक्षणिक वातावरण देने का पूरा प्रयास करे। यह वातावरण बच्चों को स्वाभाविक रूप से गतिविधियों में शामिल होने, प्रभावशाली तरीके से अपनी बात बोलने, और सुनने के तरीकों को सीखने में मददगार होगा। बच्चों के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जहां वे स्वयं को महत्त्वपूर्ण, सम्मानित और सुरक्षित महसूस करें, साथ ही स्वयं के प्रति सकारात्मक भाव रख सकें। यह वातावरण बच्चों को विविध प्रकार के अनुभवों को लेने और अपने आपको खुलकर अभिव्यक्त करने के अवसर देता है।

भाग - 2 :
पूर्व प्राथमिक शिक्षा की चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में नेतृत्वकर्ता –

1. पूर्व प्राथमिक शिक्षा की प्रमुख चुनौतियों की पहचान कर सकेंगे।
2. विभिन्न चुनौतियों के बीच से अवसरों की पहचान कर सकेंगे।

परिचय

जैसा कि देश में किए गए अनेक उपलब्धि सर्वेक्षणों के परिणामों में देखा गया है कि बच्चे इस आधारभूत अवस्था (foundational stage) के अंत तक पढ़ने, लिखने, अंकगणित करने के बुनियादी कौशल, योग्यता और दृष्टिकोण को नहीं सीख पाते हैं। जो कि एक नेतृत्वकर्ता के लिए प्रमुख चुनौती है। इसके साथ ही यह चुनौती भी जुड़ी हुई है कि प्री-स्कूल शिक्षा और प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं को दो अलग-अलग चरणों में देखा जाता है जबकि हमें इसे 3 से 8 या 9 वर्ष की उम्र तक निरंतरता के रूप में देखना और उसके लिए योजना बनाना चाहिए। जबकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी आधारभूत अवस्था (foundational stage) को 5 वर्ष (3 वर्ष आंगनवाड़ी/शाला पूर्व शिक्षा और 2 वर्ष कक्षा 1 व 2 जो 6 से 8 वर्ष आयु को शामिल करता है) के लिए उपयुक्त माना है। हालांकि, इन शुरुआती वर्षों में अक्सर हम शिक्षा को पर्याप्त महत्व नहीं देते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 से पूर्व, शासकीय विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा (3 से 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के लिए) का कोई प्रावधान नहीं था। छात्र सीधे कक्षा 1 में प्रवेश लेते और कई बार विद्यालय छोड़ भी देते थे। कुछ छात्र शासकीय विद्यालय परिसर में संचालित आंगनवाड़ी से आते हैं। इन आंगनवाड़ियों में शैक्षिक दृष्टि से सुविधाओं का अभाव रहता है। यहां शासन की अनेक योजनाएँ संचालित रहती हैं जैसे-पोषाहार योजना, पोषण एवं स्वास्थ्य परामर्श, किशोरी शक्ति परियोजना, बच्चों का टीकाकरण, मातृ वंदना योजना, स्कूल-पूर्व शिक्षा आदि । अधिकांशतः बच्चे स्कूल-पूर्व शिक्षा के अतिरिक्त शेष सभी सुविधाओं का लाभ लेते, स्कूल-पूर्व शिक्षा की कुछ थोड़ी गतिविधियां करते और चले जाते। जबकि हम सभी जानते हैं कि मस्तिष्क का लगभग 80 प्रतिशत विकास 8 साल की उम्र तक पूरा हो जाता है और स्कूल के पूर्व की शिक्षा और स्कूल में प्रारंभिक वर्षों की शिक्षा भविष्य की शिक्षा का आधार प्रदान करती हैं। ऐसे में नेतृत्वकर्ता के समक्ष कई चुनौतियाँ होंगी। जैसे -

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए कक्षा (शिशु कक्षा)की व्यवस्था कैसी हो ?
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा (शिशु कक्षा) में क्या-क्या सुविधाएं दी जाएं?
- अभिभावकों को कैसे जागरूक करें कि वे अपने बच्चों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा (शिशु कक्षा)में भेजें?
- अभिभावकों की पूर्व प्राथमिक शिक्षा की अवधारणा पर सकारात्मक सोच कैसे बनाएँ?

- प्रारंभिक शिक्षा हेतु शिक्षकों की भूमिका क्या हो?
- प्रारम्भिक वर्षों में बच्चे कैसे सीखते हैं?
- शिक्षक प्रशिक्षण कैसा होगा?
- क्या यह प्रशिक्षण सभी शिक्षकों को दिया जाएगा?

यदि हम इन चुनौतियों से निपटना चाहते हैं तो एक नेतृत्वकर्ता के रूप में हमारा अपना दृष्टिकोण होना बहुत जरूरी है। जिसमें उक्त प्रश्नों के जवाब हम खुद खोज सकें। संभवतः इन प्रश्नों के जवाबों के लिए हमें अपने विद्यालय में आने वाले बच्चों से, शिक्षक साथियों से, और उनके माता-पिता से बातचीत करना होगा। तो चलिए, नीचे दिए सवालों के जवाब खोजते हैं-

एक नेतृत्वकर्ता के रूप में आप अपनी शाला में 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा' को कैसे आकर्षक बनाएंगे?

.....

.....

.....

.....

कक्षा को आकर्षक बनाते समय किन प्रमुख 3 बातों का ध्यान रखेंगे?

.....

.....

.....

.....

3 वर्ष का बच्चा जब पहली बार पूर्व प्राथमिक कक्षा में आता है तो इसके पूर्व वह घर में, माता-पिता से, आसपास के वातावरण से कुछ न कुछ सीख कर आता है। जिस तरह का वातावरण बच्चे को उसके घर व आसपास में मिलता है उसी तरह से वह अवलोकन कर सीखता है। अतः नेतृत्वकर्ता का दायित्व हो जाता है कि वह सीखने का सकारात्मक वातावरण पूर्व प्राथमिक कक्षा के लिए तैयार करें, साथ ही पर्याप्त संसाधन व व्यवस्थाएं सुनिश्चित करे। जैसे -

- कमरा स्वच्छ व आकर्षक हो ।
- बच्चों के लिए स्वच्छ पेयजल व स्वच्छ शौचालय की व्यवस्था हो।
- बच्चों की देखभाल और शिक्षण हेतु सुरक्षित वातावरण हो।
- कक्षा का वातावरण स्नेह, संरक्षण और विश्वास से भरा हो।

- बच्चे के उचित स्वास्थ्य, पोषण की व्यवस्था हो।
- नियमित स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्था हो।
- अभिभावकों से सतत सम्पर्क किया जाता हो।
- पूर्व प्राथमिक शिक्षा से प्रशिक्षित शिक्षकों की व्यवस्था हो।
- सीखने के पर्याप्त अवसर की उपलब्धता हो।

चलिए अब बात करते हैं कि एक नेतृत्वकर्ता विभिन्न चुनौतियों के बीच से अवसरों की पहचान कैसे कर सकते हैं? इसके लिए दो अलग-अलग केस स्टडी को पढ़ते हैं और विचार करते हैं कि यहां किस तरह के नेतृत्व की आवश्यकता है।

केस स्टडी 1–नेतृत्वकर्ता द्वारा शिक्षकों का मार्गदर्शन

जबलपुर में स्थित 'शासकीय पूर्व प्राथमिक प्रशिक्षण संस्थान' के प्रशिक्षणार्थियों का अवलोकन करने पर पाया कि विनीता अपने सभी कार्यों में दक्ष है। वह सैद्धांतिक विषयों के साथ प्रायोगिक विषयों में बहुत रुचि लेती है। जब कभी बच्चों के साथ अभ्यास शाला में जाने का मौका आता है, तब वह मन लगाकर उनके साथ कार्य करती है, जैसे भाषा विकास के लिए बच्चों को बोलने के अधिक अवसर देना, सामग्री का उचित उपयोग करना, कहानी का मंचीय प्रदर्शन करना, मॉडल बनाकर उस पर बच्चों से चर्चा करना, बालोद्यान में कार्य करना, सूखी पत्तियों को जोड़ना, गिनना, पैटर्न बनाना आदि।

वहीं अगर सीमा को देखें, जो विनीता की कक्षा में ही प्रशिक्षणार्थी है। वह कक्षा में नियमित है और सैद्धांतिक विषयों में अधिक दक्ष है, किंतु प्रायोगिक विषयों में उसकी अधिक रुचि नहीं है। बच्चों के साथ अभ्यास शाला में जाने का समय आता है तब वह बच्चों के साथ तालमेल स्थापित नहीं कर पाती। ना तो वह सामग्री का सही उपयोग कर पाती है ना ही बच्चों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर पाती।

इन दोनों परिस्थितियों का अवलोकन करने के बाद अब विचार कीजिए -

- यदि ऊपर दी गई परिस्थिति में नेतृत्वकर्ता के रूप में आप होते तो यहां किस तरह का नेतृत्व करते?

.....

.....

.....

.....

.....

केस स्टडी 2–शिशुओं का शाला में समन्वय

जबलपुर की शासकीय शाला की प्रधानाध्यापिका ने अपना अनुभव बताया। जब मैंने मेरे बेटे को पूर्व प्राथमिक शाला में डाला तो पहले दिन का अनुभव मैं कभी नहीं भूल पाई क्योंकि उन दिनों प्राइवेट शालाओं में ही नर्सरी कक्षाएं संचालित हुआ करती थीं। इसलिए मैंने अपने बेटे को प्राइवेट शाला की नर्सरी कक्षा में दाखिल करवा दिया।

प्राइवेट शालाओं के नियम तो आप सभी जानते ही हैं, बहुत कठोर होते हैं। वहां बच्चों को गेट पर ही छोड़ने की अनुमति थी। अभिभावकों के लिए बच्चे को कक्षा में देखना, कक्षा के क्रियाकलापों को देखने की अनुमति नहीं थी। मेरा बेटा शाला जाने के समय बहुत उत्सुक था, उसकी प्रसन्नता उसके चेहरे पर नजर आ रही थी।

छुट्टी होने का समय आया। मैं गेट पर खड़े होकर इंतजार कर रही थी, तभी एक-एक करके बच्चे रोते हुए निकल रहे थे। मुझे पूर्ण विश्वास था कि मेरा बच्चा नहीं रोएगा, किंतु अन्य बच्चों की तरह वह भी रोता हुआ आया। उसको रोता देखकर मेरा मन व्यथित हो गया। उसके बाद वह शाला जाने से संकोच करने लगा।

अब शाला के लिए उसके मन में पहले जैसी रुचि नहीं थी। मैंने बड़ी मुश्किल से उसको विभिन्न प्रलोभन देकर वापस शाला जाने के लिए मनाया। यह सब देखकर मैंने सोचा कि जब कभी शासकीय शालाओं में पूर्व प्राथमिक शिक्षा खोली जाएगी तब मैं बच्चों की मानसिक भावनाओं को ध्यान में रखकर ही शिक्षण और दैनिक कार्यकलापों की योजना बनाऊंगी।

इस परिस्थिति का अवलोकन करने के बाद अब विचार कीजिए -

- यदि ऊपर दी गई परिस्थिति में नेतृत्वकर्ता के रूप में यदि आप होते तो क्या करते?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

अभी यहां हमने अलग-अलग तरह की दो केस स्टडी को पढ़ा है और निश्चित ही हम यह समझ पाए होंगे कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षाओं को शुरू करना, उस दौरान उस आयुवर्ग के बच्चों को संभालना और उनके लिए शिक्षण योजना बनाना, एक अलग तरह के नेतृत्व की माँग करता है। यह नेतृत्व उस समय और भी मुश्किल हो जाता है जब पूर्व प्राथमिक शिक्षा और उस आयुवर्ग के बच्चों के साथ पहली बार काम करने का अवसर मिलता है। इसलिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा को शुरू करते समय कुछ बातों का ध्यान रखना जरुरी है -

पूर्व प्राथमिक शिक्षा को शाला में शुरू करते समय ध्यान देने वाली बातें –

- शुरुआत में कुछ दिनों तक बच्चों के साथ अभिभावकों को भी शाला में कक्षा के बाहर बैठने की अनुमति दी जा सकती है ताकि अभिभावक शाला में होने वाली गतिविधियों को देख सकें तथा बच्चे भी अपने आप को अभिभावकों की उपस्थिति में सुरक्षित महसूस कर सकें।
- शुरुआत में कम समय के लिए बच्चों को बुलाया जाए और धीरे-धीरे समय को बढ़ाया जा सकता है जिससे बच्चों का मन भी लगा रहे ।
- बच्चों के फीते बांधने, शौच आदि की समस्याओं का समाधान के लिए शाला के समय अभिभावकों का सहयोग भी लिया जा सकता है।

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा में बच्चों के आराम के लिए एक कोना भी बनाया जा सकता है और जरूरत के अनुसार बच्चों को कुछ देर आराम करने का समय भी दिया जा सकता है ।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा में बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु निम्नलिखित सुझावात्मक व्यवस्थाएं की जा सकती हैं –

- बैठने हेतु दरी /छोटी टेबल-कुर्सी/चौकियाँ।
- विश्राम/सोने के लिए कक्षा में व्यापक पलंग रखा जा सकता है।
- बच्चों की पानी की बोतल, टिफिन, आदि रखने की अलग व्यवस्था हो।
- जूते-चप्पल रखने की रैक रखी हो।
- सीखने के सात क्षेत्रों साक्षरता क्षेत्र, गुड्डे-गुड़ियों का क्षेत्र, विज्ञान क्षेत्र, ब्लॉक बिल्डिंग का क्षेत्र, गणित का क्षेत्र, कला क्षेत्र के लिए संबंधित सामग्रियाँ रखने हेतु अलग-अलग स्थान या अलमारियाँ हो ।
- कक्षा-कक्ष रंगीन व आकर्षक हो।

जैसा कि अभी हमने पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा की आवश्यकताओं और चुनौतियों की पहचान कर ली है, तो अब हम नीचे दिए हुए कुछ सवालों के जवाब खोजते हैं -

चिंतन मनन के प्रश्न –

- ऐसे कौन-कौन से कारक हैं जो पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चों के सीखने में बाधक हैं?(घर और समुदाय से सम्बंधित कारक, शाला और कक्षा से सम्बंधित कारक)

.....

.....

.....

- पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा में बच्चों को सिखाने के समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है?

.....

.....

.....

- आपको क्या लगता है, क्या पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा हेतु बस्ते की आवश्यकता है? यदि हाँ तो क्यों?

.....

.....

.....

पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु वर्तमान परिदृश्य में शालाओं में नेतृत्वकर्ता के समक्ष जो चुनौतियां आ सकती हैं उस पर हमने चर्चा की है। विशेष रूप से नेतृत्वृकर्ता को बच्चों के अभिभावकों को प्रेरित करने की चुनौती का सामना करना होगा कि वे अपने नन्हें बच्चों को पूर्व प्राथमिक शिक्षा हेतु शाला में भेजें। साथ ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा को उनके अनुरूप व्यवस्थित करने का दायित्व भी निभाना होगा। बच्चों की रूचिनुसार खेल सामग्री की उपलब्धता, स्वस्थ आदतों का विकास करने के अवसर भी देने होंगे। शाला में बच्चों की सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम करने होंगे ताकि अभिभावक एवं बच्चे अपने आप को सुरक्षित महसूस करें। इस हेतु नेतृत्वकर्ता को सभी क्षेत्रों की मॉनीटरिंग भी करना होगी। साथ ही सीखने-सिखाने के पर्याप्त अवसर एवं संसाधनों की व्यवस्था करनी होगी।

चरण 2 भाग - 1 :
प्रारंभिक साक्षरता एवं गणित की कक्षा संचालन हेतु प्रधानाध्यापक की भूमिका को चिन्हित करना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में नेतृत्वकर्ता –

प्रारंभिक साक्षरता व गणित शिक्षण हेतु आनंददायी वातावरण निर्माण की आवश्यकता को समझ सकेंगे।

जैसा कि हम सभी इस मॉड्यूल के पहले चरण को पढ़ चुके हैं और निश्चित ही यह भी समझ सके हैं कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा क्या है। जब हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा की बात करते हैं तो इस दौरान कई सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। यह चुनौतियां न सिर्फ शिक्षकों के समक्ष सामने आती हैं वरन बच्चों के समक्ष भी सीखने के दौरान आती हैं। एक शिक्षक होने के नाते हममें यह कुशलता होना जरूरी है कि हम चुनौतियों को अवसरों में बदल सकें, बच्चों का सीखना सुनिश्चित कर सकें और पारंपरिक आकलन की परिपाटी से दूर गैर पारंपरिक आकलन की शुरुआत कर सकें। जिससे बच्चों की पढ़ाई बाधित न हो और वे अपनी पढ़ाई को पूरा कर सकें। **मॉड्यूल के चरण 2** में हम इन्हीं मुद्दों को पढ़ेंगे और समझेगें कि कैसे एक नेतृत्वकर्ता इन परिस्थितियों में बेहतर नेतृत्व कर सकते हैं।

परिचय

3-6 वर्ष की उम्र में जब बच्चा पहली बार घर छोड़कर शाला में आता है तब नेतृत्वकर्ता के लिए जरूरी होता है कि वह बच्चों को आनंददायक और स्नेह युक्त वातावरण उपलब्ध करवाएं। इस हेतु बच्चों के साथ लगातार बातचीत करना, उन्हें भयमुक्त वातावरण देना नेतृत्वकर्ता का पहला महत्त्वपूर्ण काम होता है। इसी तरह बच्चों को शाला के लिए, आगामी कक्षाओं के लिए तैयार करना और उनमें प्रारंभिक साक्षरता व गणित की समझ विकसित करना दूसरा महत्त्वपूर्ण काम है। इसी तरह अभिभावकों को शाला से जोड़ना और शिक्षा का महत्व समझाना तीसरा महत्वपूर्ण काम है ।

इन कामों को सरल करने के लिए स्कूल रेडीनेस की कुछ गतिविधियों को प्राथमिकता के साथ करवाना जरुरी होता है जिसके अंतर्गत गीत, कहानी, शैक्षणिक खेल, बौद्धिक खेल और सृजनात्मक एंव रचनात्मक गतिविधियां बच्चों से करवाई जा सकती हैं। इन गतिविधियों की मदद से बच्चों में शाला के प्रति रुचि जागृत हो सकेगी। इस हेतु, नेतृत्वकर्ता को शिक्षकों के साथ मिलकर साप्ताहिक योजना की रणनीति भी बनानी होगी।

यहाँ एक नेतृत्वकर्ता के लिए यह भी समझना जरूरी है कि प्रारंभिक साक्षरता और गणित के मायने क्या हैं और इस आयु में ही इसके शिक्षण के शुरुआत की आवश्यकता क्यों है? तो सबसे पहले बात करते हैं भाषा के बारे में -

भाषा सुनने, बोलने, पढ़ने और लिखने से कहीं आगे है। भाषा अनुमान लगाने और तर्क करने की प्रक्रिया का एक माध्यम है। यह कई उद्देश्यों को पूरा करती है जैसे- अपनी बात को दूसरों तक पहुंचाना (संचार), दूसरों की सोच और दुनिया को समझना। असल में, प्रारंभिक भाषा और साक्षरता कौशल ही औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में बेहतर तरीके से सीखने का आधार है। इसी तरह समझ के साथ पढ़ना, सीखना और स्वतंत्र रूप से लिखना, यह गुणवत्ता सुनिश्चित करने के सबसे महत्त्वपूर्ण तत्व हो सकते हैं क्योंकि यह वे बुनियादी कौशल हैं जो भविष्य के सीखने के

लिए मार्ग तैयार करते हैं। यदि कोई शाला प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं में सभी बच्चों को अच्छी तरह से पढ़ना-लिखना नहीं सिखा पाता है, तो निश्चित रूप से उस शाला, कक्षा और वहां के नेतृत्व में सुधार करने की आवश्यकता है और एक नेतृत्वकर्ता को काम करने के तरीके पर पुनर्विचार कर आवश्यक संशोधन करने की आवश्यकता है ।

चलिए अब बात करते हैं कक्षा में प्रारंभिक गणित के शिक्षण की -

- गणित के विभिन्न घटकों, जैसे संख्या और संख्या का आपसी संबंध, संक्रियाएं, मापन, ज्यामितीय आकृतियां, पैटर्न और आंकड़ों का प्रबंधन के बारे में समझ के साथ सीखना।
- गणित सीखने को एक मनोरंजक, उद्देश्यपूर्ण और सार्थक गतिविधि बनाना।
- पहली बार शिक्षा से जुड़ने वाले बच्चों/शिक्षार्थियों के बीच अलग-अलग तरह की रणनीतियों, विज़ुअलाइज़ेशन और उनमें समस्या-समाधान क्षमताओं के विकास को सुगम बनाना।
- बच्चों/शिक्षार्थियों को गणितीय रूप से सक्षम बनाना जिससे वे उपयुक्त भाषा का उपयोग करके बात करने और संवाद करने, तार्किक रूप से सोचने और उनके तर्क को सही ठहरा सकें।
- पहली बार शिक्षा से जुड़ने वाले बच्चों/शिक्षार्थियों को व्यस्त और आत्मविश्वासी गणितीय छात्र बनने के लिए समृद्ध और विकासात्मक रूप से उपयुक्त गणितीय अवसर प्रदान करना।

जैसा कि हम सभी जानते हैं, संख्या पूर्व अवधारणा और संख्याओं की समझ का विकास पूर्व प्राथमिक शिक्षा के वर्षों में तेजी से होता है। प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाओं में ही तुलना, क्रम से जमाना, वर्गीकरण और पहचानने के पैटर्न का ज्ञान और कौशल आगे जाकर गणित सीखने की नींव के रूप में कार्य करता है।

हालांकि ऐसा माना जाता है कि गणित एक कठिन विषय है। जबकि कक्षा 3 तक आते-आते बच्चे गणित के लिए पसंद या नापसंद के बारे में बताना शुरू कर देते हैं। गणित सीखने में विभिन्न अवधारणाओं की श्रेणीबद्ध प्रकृति को देखते हुए, यह जरूरी हो जाता है कि हम बच्चों को गणित सीखने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करें। जहां सभी बच्चे गणित को सार्थक और मनोरंजक तरीके से सीख सकें। गणित सिखाते समय दिए जाने वाले निर्देश/कार्य इस तरह के होने चाहिए जो बच्चों को सोचने, बात करने, खोज/अन्वेषण करने, प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि वे बेहतर गणितीय शिक्षार्थी बन सकें। जैसा कि हम सभी का अभी तक का अनुभव प्राथमिक और माध्यमिक कक्षा के बच्चों को पढ़ाने का है लेकिन अब हम पूर्व प्राथमिक शिक्षा के बच्चों को सिखाने के बारे में बात कर रहे हैं और हमारे लिए यह जानना जरूरी है कि 'पूर्व प्राथमिक शिक्षा की कक्षा' में कौन-कौन सी गतिविधियाँ करवाई जाना चाहिए जिससे उनके सभी प्रमुख 5 क्षेत्रों का विकास हो सके ।

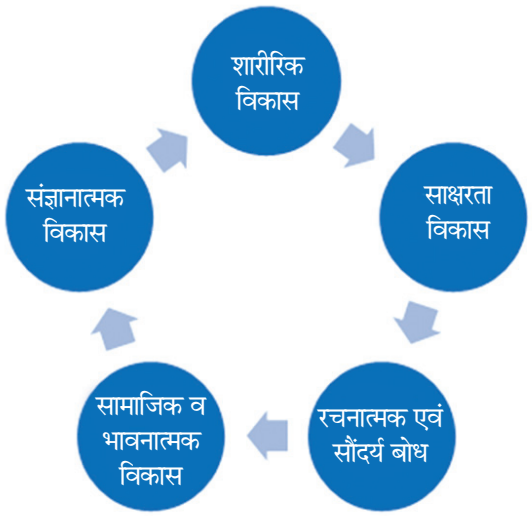

इन पांचों क्षेत्रों में की जाने वाली गतिविधियों और उससे संबंधित चित्रों को हम इस मॉड्यूल में भी देख सकते हैं जो हमें यह समझने में मदद करेगा कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की कक्षा में आनंददायी वातावरण कैसे तैयार किया जा सकता है और बनाए रखा जा सकता है।

व्यावहारिक गतिविधियां

सृजनात्मक गतिविधियां

ज्ञानेन्द्रिय के साधन

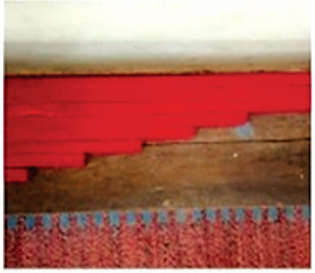

1. स्कूल रेडीनेस हेतु गतिविधियां

- **बाल प्रार्थना** - भोजन प्रार्थना, शांति पाठ
- **बाल गीत**- अभिनय गीत, वर्णन गीत, त्यौहारों पर गीत, बड़बड़ गीत
- **शैक्षणिक खेल** - जानवरों की चाल, आवास के खेल, स्वतंत्र खेल (मेंढक दौड़, घोड़ापछाड़ खाई)
- **मुक्त खेल** - दौड़ना, कूदना, फेंकना, रेत में खेलना
- **गणित खेल** - रेत, बीज, सूखी पत्तियों पर गतिविधियां
- **कला के खेल** - चित्रकारी, रंग भरना
- **भाषा का खेल**- अभिव्यक्ति चार्ट, कठपुतली मंच, वर्णों की पहचान, शब्द निर्माण, वर्णों और शब्दों की जोड़-तोड़।

2. प्रारंभिक साक्षरता एवं भाषा विकास हेतु शिक्षकों की भूमिका

जैसा कि हम सभी भाषा के महत्व को भलीभांति समझते हैं। भाषा द्वारा ही हम अपने भावों को दूसरों तक पहुंचाते हैं और दूसरों के भावों को समझते और अनुभव करते हैं। भाषा के मुख्यतः तीन रूप होते हैं, मौखिक भाषा, लिखित भाषा और सांकेतिक भाषा। सामान्य तौर पर भाषा के केवल दो रूप होते हैं एक बोलने की जिसे हम मौखिक भाषा कहते हैं और दूसरी लिखने की जिसे हम लिखित भाषा कहते हैं। लिखित भाषा मौखिक भाषा का मूर्त स्वरूप है। वर्णमाला में हमारे सब प्रकार के विचारों को मूर्त रूप देने की असीमित योग्यता होती है । इसलिए बच्चों में प्रारंभिक भाषा विकास हेतु शिक्षकों को कुछ बातों का विशेषतः ध्यान रखना होगा, जैसे -

1. बच्चों के स्तर अनुरूप भाषा का प्रयोग करना ।
2. मानक भाषा के साथ-साथ स्थानीय भाषा / बच्चों के घर में बोली जाने वाली भाषा का भी उपयोग करना।
3. बच्चों के साथ की जाने वाली गतिविधियों के निर्देश स्पष्ट हों तथा गतिविधियों का चयन बच्चों के स्तर अनुरूप हो।
4. रोचक व सरलतम गतिविधियों का चयन हो।

5. कहानी छोटी एवं रूचिपूर्ण हो। कहानी कहने का तरीका हाव-भाव के साथ हो। वार्तालाप, पपेट्स, चित्रों, अभिनय द्वारा कहानी सुनाई जाए। इस बात का ध्यान रखें कि कहानी सुनाते समय बच्चों में जिज्ञासा, कौतुहल बना रहे। कहानी सुनाते समय बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न पूछें और यदि कोई बच्चा कहानी के बीच में अपनी कोई बात साझा करना चाह रहा हो तो उसे बोलने का अवसर दें।

6. बच्चों को लिखने का अभ्यास करवाने हेतु कुछ प्रारम्भिक गतिविधियां करवाना जैसे रेत पर हाथ घुमाना। इस गतिविधि में सबसे पहले बच्चों को संबंधित वर्ण के आकार और उसकी ध्वनि की पहचान करवाई जाती है जिसके बाद बच्चा लिखने की तैयारी हेतु तैयार होता है। यह अभ्यास बच्चे को प्रारंभिक शिक्षण के लिए तैयार करने में मदद करता है।

7. मौखिक भाषा विकास हेतु बच्चों को अलग-अलग विषयों पर अभिव्यक्ति चार्ट दिखाकर उस पर बातचीत की जाती है। इस गतिविधि में बच्चा चार्ट में दिख रहे चित्रों को देखकर बताता है उसे उसमें क्या-क्या दिख रहा है।

8. बच्चों से विभिन्न प्रकार की पहेलियां पूछी जाती हैं और उन्हें उसे बूझने के मौके भी दिए जाते हैं। यह पहेलियां पशु-पक्षी, वस्तुओं, फल-सब्जी, शरीर के अंगों पर आधारित रहती हैं।

9. बच्चों के साथ शब्द अंताक्षरी का प्रयोग किया जा सकता है। इस गतिविधि में बच्चे वर्ण की अंतिम ध्वनि की पहचान करना सीखते हैं।

10. बच्चों के साथ उनके मौखिक भाषा विकास हेतु कुछ तुकबंदी भी बनवाई जा सकती है जैसे-जल, कल, नल, पल, तल, थल।

11. एक अक्षर से बनने वाले शब्दों को बनवाना जैसे- रस, रसगुल्ला, रसमलाई, रस्सील, रबड़ी।

शिक्षण में मददगार कुछ गतिविधियां –

अब इससे आगे की बात करते हैं और यह समझते हैं कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा शाला में आने वाले बच्चों के साथ किस तरह की गतिविधियों को करवाना चाहिए जिससे वे शिक्षा और शाला से जुड़ सकें। इसके लिए यह समझना जरूरी है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा शाला में आने वाले बच्चों के लिए किस तरह के वर्णकार्ड का उपयोग किया जाना चाहिए। जैसा कि मांटेसरी पद्धति में वर्णमाला के सभी अक्षर रेगमार कागज पर कटे हुए होते हैं। जिसे दो अलग-अलग रंग के कार्ड पर चिपकाया जाता है। स्वर वाले रेगमार अक्षर को नीले कार्ड पर चिपकाया जाता है और व्यंजन को गुलाबी कार्ड पर चिपकाया जाता है। यहां कुछ सुझावात्मक गतिविधियां दी गई हैं -

भाषा विकास की गतिविधि –

सबसे पहले अध्यापक बच्चों को अंगुलियां धोने के लिए कहें, ताकि अँगुलियों का अग्रभाग भावशील हो जाए। अब बच्चों को अक्षर कार्ड लाने को कहें। ध्यान रहे कार्ड के जिस ओर अक्षर दिख रहा हो वो बाहर की ओर होगा। जब बच्चे अक्षर कार्ड ले आएं तो उसे मेज पर इस प्रकार रखने को कहें कि बच्चा उसे आसानी से देख व पढ़ सके। अब बच्चे को अपने बाएं हाथ से उस कार्ड को पकड़ने के लिए कहें और दाएं हाथ की पहली दो अंगुलियों को धीरे-धीरे अक्षर पर फेरने के लिए कहें। अंगुलियाँ फेरते समय ध्यान रखें कि अक्षर को पूरा करने वाली शीर्ष रेखा पर बच्चा सबसे आखिर में अंगुली फेरे। जब बच्चा आखिर में शीर्ष रेखा पर अंगुली फेरे तब शिक्षक अक्षर का नाम उच्चारण करें जिसे बच्चा

दोहराए। बच्चा जब-जब अंगुलियां फेरेगा तब-तब वह अक्षर का उच्चारण करेगा और जब वह ठीक प्रकार से अंगुलियां फेर और सही उच्चारण करने लगे तब शिक्षक वहां से हट जाए। बच्चा इसी प्रकार धीरे-धीरे अक्षर को पहचाने लगता है और ठीक उच्चारण करने लगता है। जब बालक ठीक उच्चारण करने लगे तो उसे शब्द की ध्वनियों में उस सीखे हुए अक्षर की ध्वनि को पहचानने के लिए कहा जाएगा। उदाहरणार्थ यदि बच्चे को आ की ध्वनि की पहचान करवानी हो तो उसे आम, आलू जैसे शब्द दिए जा सकते हैं।

गणित की खेल गतिविधियां –

छोटे बच्चों के लिए बातचीत और गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी सीखने के महत्त्वपूर्ण माध्यम होते हैं। इसके लिए कक्षा में उत्साहवर्धक और सौहार्द्रपूर्ण माहौल बनाना, बच्चों की घर की भाषा, उनके पूर्व ज्ञान व अनुभव का इस्तेमाल जरूरी है। इसी तरह संख्याओं की समझ हेतु गणनाओं को आसान बनाना जरूरी है, जिसमें मिलान करना, छंटाई करना और वर्गीकरण करवाया जा सकता है। संक्रियाओं को हल करवाते समय अवधारणाओं और प्रतीकों को समझना, तथ्यों के साथ सरल जोड़ और घटाव करवाना महत्त्वपूर्ण है। यह सभी अभ्यास बच्चों में गणितीय संक्रियाओं पर एक वैचारिक समझ को विकसित करने में मदद करते हैं। साथ ही वे अभ्यास कर गणनाओं को आसान बनाने और समस्या समाधान में आत्मविश्वास हासिल करने के लिए विभिन्न तरीकों से संख्याओं का उपयोग करने पर अपना ध्यान केन्द्रित कर पाते हैं।

गणित में मूल्यांकों के नाम (अंक के नाम) और परिमाणों (ठोस आकृति से अमूर्त संख्या को मूर्त करना) के ज्ञान के लिए अंक सीढ़ी, मूल्यांकों के प्रतीकों के परिचय के लिए रेतीय अंक (रेगमार कागज पर कटे हुए), इकाई के रूप में गिनती का अभ्यास और परिमाण और प्रतीकों के सहचर्य (जोड़ी बनाना) के लिए कार्ड कोड़ी, इकाई-दहाई की समझ के लिए सेंधा फलक (सख्याओं की फ्रेमिंग), शून्य को परिचित कराने के लिए शलाका पेटी, आकृतियों की पहचान करवाने के लिए भौमितिक आकृतियां आदि साधनों का उपयोग किया जाता है। इन सब साधनों को उठाने, पकड़ने और रखने का तरीका भी बताया जाता है ताकि बच्चों की सूक्ष्य मांसपेशियां मजबूत हों और आगे जाकर उनका पेंसिल

पकड़ने का अभ्यास हो जाए। प्रारंभिक गणित से संबंधित समझ के लिए विभिन्न गतिविधियाँ की जा सकती है।

शिशु के आसपास पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु की कोई न कोई आकृति होती है। कोई वस्तु गोल, त्रिकोण, चौकोर, अण्डाकार, आयताकार होती है। यह सभी आकृतियां हमें घर, मैदान, आंगन, फल-फूल, सब्जी, पेड़-पौधों में देखने को मिलती हैं। इन आकृतियों की पहचान हम बच्चों को खेल-खेल में करवा सकते हैं एवं कुछ समय बाद बच्चों द्वारा स्वयं भी खेला जा सकता है। इस हेतु कक्ष में या बाहर मैदान में बड़ा गोला, बड़ा त्रिकोण, तथा बड़ा चौकोन बनाना होगा तथा बच्चों को एक पंक्ति में इस तरह खड़ा करना होगा कि सभी बच्चे आकृति को ठीक तरीके से देख सकें। इस तरह की गतिविधि करवाने के लिए बच्चों को इस तरह से निर्देश दिए जाने चाहिए जिससे बच्चे तेजी से चलकर बोली गयी आकृति में खड़े हो सकें। बच्चा अगर गलत आकृति में खड़ा होता है तो उसे खेल से अलग न करें, बच्चे को आकृति से जुड़ने में मदद करें। इस तरह बच्चे मूल आकृतियों से अच्छी तरह परिचित हो सकेंगे।

ज्ञानेन्द्रियों के विकास हेतु गतिविधियां –

मांटेसरी पद्धति में इंद्रियों के शिक्षण का बहुत अधिक महत्व है यह बालक के इंद्रिय अनुभव और ज्ञान साधनों को विधिपूर्वक वैज्ञानिक रूप से बढ़ाती है तथा स्पष्टीकरण भी करती है। वह उनमें परिपाटी और शिष्टता का विकास करती है।

विभिन्न इंद्रियों के विकास के लिए सामग्री और साधन –

दृश्येन्द्रिय– बच्चे आसानी से देखकर ऊँचा-नीचा, बड़ा-छोटा, चौड़ा-संकरा, लंबा-छोटा एवं रंगों का भेद समझ सकें, इसके लिए गट्टा पेटी, गुलाबी मीनार, चौड़ी सीढ़ी, लंबी सीढ़ी, रंगों की चपटी रीलें साधनों का प्रयोग किया जाता है।

स्पर्शेन्द्रिय– बच्चों की अंगुलियों के अग्रभाग से अलग-अलग तरह के कपड़ों को स्पर्श करवाकर कोमल और खुरदुरा का ज्ञान कराया जाता है।

कर्णेन्द्रिय– विभिन्न ध्वनि की पहचान करवाने के लिए अलग-अलग डिब्बियों में कुछ कंकड़, दालें डालकर बजाने और उसकी ध्वनि को सुनाने से बच्चों को तेज-धीमी ध्वनियों का अभ्यास करवाया जाता है।

रसेन्द्रिय– जीभ पर विभिन्न खाद्य वस्तुओं से खट्टा, मीठा, तीखा, कड़वा आदि का ड्रॉपर द्वारा स्वाद कराया जाता है।

घ्राणेन्द्रिय– विभिन्न प्रकार की गंध जैसे फल, फूल, जलती हुई वस्तु, सड़ी-गली वस्तु, मिर्च, चाय, कॉफी, जड़ी-बूटी आदि की गंध का सूंघवाकर अनुभव कराया जाता है।

भारेन्द्रिय– विभिन्न भार की लकड़ी की पट्टियों को उठाने के अभ्यास से हल्का-भारी का अनुभव करवाया जाता है।

तापेंद्रिय– बोतल में भिन्न-भिन्न ताप का पानी डाला जाता है, जिससे बच्चों को छूने के लिए कहा जाता है और उन्हें

उष्ण और शीत (ठंडा-गर्म) का अनुभव करवाया जाता है।

इंद्रिय शिक्षण से निम्नलिखित लाभ हैं-

- इंद्रिय साधनों द्वारा चीजों के भेदों का बोध विकसित और तीव्र होता है। बच्चे इंद्रिय साधनों द्वारा चीजों के रंग-रूप, वजन, स्वभाव, सुगंध, ताप, लंबाई, चौड़ाई, मोटाई आदि के भेदों के परखने की शक्तियों का विकास करता है। साथ ही इन शब्दों से परिचित होता है और दैनिक जीवन में इन शब्दों का उपयोग करता है।
- इनके प्रयोग द्वारा शरीर की क्रियाओं में शिष्टता आ जाती है बच्चे चीजें उठाने, निकालने, रखने में शिष्टता दिखाता है।
- विभिन्न इन्द्रियों के प्रयोग से बच्चों के इंद्रिय दोष सहज ही प्रकट हो जाते हैं जो बिना इन साधनों के लम्बे समय तक पता नहीं लग पाते हैं। इंद्रिय दोष का जल्दी पता लग जाना एक बहुत बड़ा लाभ है क्योंकि फिर इसे सहज ही हटाया/दूर किया जा सकता है।
- बच्चों में अलग-अलग चीजों के गुणों की परख बढ़ती है और चीजों के गुणों को अनुभव करने और जानने की शक्ति बढ़ती है।
- बच्चे विभिन्न वस्तुओं की परस्पर एकता और मेल या अनमेल का अनुभव करता है। यह अनुभव उसमें सुंदरता के विकास में सहायक बनते हैं।
- इन इंद्रिय साधनों में से ध्यान की एकाग्रता होती है । इस एकाग्रता के द्वारा बालक की बुद्धि क्षमता का विकास होता है। चीजों की परस्पर तुलना के साथ बच्चा निश्चय करना सीखता है, इससे उसकी निर्णय शक्ति बढ़ती है।
- अतः इंद्रिय साधनों द्वारा बच्चों के समस्त व्यक्तित्व का विकास होता है, इसलिए उसका बालक की शिक्षा में एक मुख्य स्थान समझा जाता है।

चलिए सभी शिक्षक मिलकर इंद्रिय शिक्षण से संबंधित एक गतिविधि करते हैं –

आवश्यक सामग्री– लकड़ी के 10 चौकोन घन जो गुलाबी रंग के होंगे। सबसे छोटा 1 सेंटीमीटर का होगा। प्रत्येक बाद के घन 1 सेंटीमीटर से बढ़ते जाएंगे अर्थात सबसे बड़ा धन 10X10X10 सेंटीमीटर का होगा।

विचार कीजिए :

- लकड़ी के अतिरिक्त और किस सामग्री से आप घन बना सकते हैं ?

प्रक्रिया –

एक दरी बिछा लीजिए और एक-एक करके घनों को चारों अंगुलियों और अंगूठे से पकड़कर उठाइए। जब सब घन आ चुके हों तो उन्हें मिलाजुला दीजिए। अब घनों को एक-एक करके अपने दाएँ ओर रखिए और सबसे पहले सबसे बड़े घन को उठाइए।

ध्यान दीजिए :

- क्या आप घन को एक-एक करके उठाते समय एकाग्रचित्तता का अनुभव कर रहे हैं ?

अब इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए इसी प्रकार आप दूसरे दर्जे वाले घन को गौर से देखें। उसे सबसे बड़े घन पर रख दीजिए। ध्यान रहे कि ऐसा करते समय आवाज ना आए। इसी तरह एक- एक कर क्रमानुसार पहले घन के ऊपर उससे छोटा घन जमाते जाइए। हर घन प्रत्येक उससे बड़े घन के बिल्कुल केंद्र में रखा जाए।

ध्यान दीजिए:

- क्या घन को केंद्र में रखने की क्रिया में आपका मानसिक प्रयत्न स्पष्ट दिखाई दे रहा है?

अब किसी एक बच्चे की आंख बंद करवाकर एक घन को बिना आवाज़ किये बीच में से निकाल लीजिए। फिर उनकी आंखें खुलवाइए और उन से पूछिए कि घन कहां से उठाया? फिर घन को स्वयं या पूछे जाने वाले शिक्षक से सही स्थान पर रखवाइए।

अब घनों को जगह-जगह बिखेर दीजिए और बच्चों से कहिए कि वह घनों को क्रमानुसार लाकर मीनार के रूप में जोड़ें।

विचार कीजिए और बताइए:

- यह गतिविधि किस इंद्रिय के विकास से संबंधित है?
- इस गतिविधि को करने से बच्चों में किन-किन गुणों का विकास होगा?
- भाषा के विकास में यह गतिविधि किस तरह उपयोगी है?
- गणित शिक्षण से इस गतिविधि का क्या संबंध है?

समेकन

मॉड्यूल के इस भाग में हमने जाना कि बच्चे कैसे सीखते हैं? सीखने हेतु वातावरण कैसे बनाया जाए ताकि सीखना भयमुक्त एवं आनंददायी हो सके और प्रारंभिक साक्षरता व गणित शिक्षण इस आयुवर्ग के बच्चों के साथ कैसे किया जाना चाहिए? बच्चे स्वाभाविक रूप से सीख सके। इस हेतु मांटेसरी शिक्षण पद्धति की गतिविधि को कक्षा में लागू करना होगा। विकास के सभी पांच क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए गतिविधियों को सभी बच्चों से करवाना होगा। स्कूल रेडीनेस के इन क्रियाकलापों का क्रियान्व्यन कर बच्चों को शाला आने के लिए आकर्षित किया जा सकता है।

नेतृत्व कर्ता प्रारंभिक साक्षरता एवं भाषा गणित की विभिन्न गतिविधियों को जानकर एवं समझकर अपने साथी शिक्षकों को प्रशिक्षित करना होगा। भाषायी विकास हेतु कविता, कहानी, वार्तालाप, अभिव्यक्ति चार्ट तथा गणित हेतु मांटेसरी के विभिन्न साधनों का उपयोग सुनिश्चित करना होगा। इसी तरह इंद्रिय शिक्षण की गतिविधियों का महत्व समझ कर कक्षा में क्रियान्वयन करना होगा। इस पद्धति में व्यक्तिगत शिक्षण, स्वतंत्रता, ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण तथा तार्किक अनुशासन के विकास को प्रमुखता दी जाती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005-पृष्ठ-87-3.11.8- विभिन्न चरणों में आकलन

पूर्व प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक चरण की कक्षा 1 एवं 2: इस स्तर पर आकलन में विभिन्न क्षेत्रों में बच्चों की गतिविधियों पर दिये गये गुणात्मक कथन होने चाहिए और उनके स्वास्थ्य और शारीरिक विकास का आकलन होना चाहिए। यह आकलन रोज़मर्रा की अंतः क्रियाओं के दौरान किए गए अवलोकनों पर आधारित होने चाहिए। किसी भी कारणवश बच्चों की लिखित या मौखिक परीक्षा नहीं होनी चाहिए।

चरण 2 भाग - 2 :
पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन के उद्देश्य को समझना

उद्देश्य : मॉड्यूल के इस भाग में नेतृत्वकर्ता –

1. नेतृत्वकर्ता/शिक्षक पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
2. नेतृत्वकर्ता /शिक्षक पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

परिचय

बच्चों से जब हम उनके पसंद के स्थान के बारे में पूछते हैं, तो अधिकतर वे ऐसे स्थानों को पसंद करते हैं जो रंग-बिरंगी, दोस्ताना और शांत हो। जहां बहुत सारी खुली जगह हो, साथ ही छोटे कोने हों, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे और खिलौने हों। कुल मिलकर यदि हम बच्चों को स्कूल में रोकना चाहते हैं तो विद्यालय में बच्चों को आकर्षित करने के लिए इन चीज़ों का होना बहुत जरूरी है। परन्तु विद्यालय में एक चीज और भी होती है जो बच्चों को विद्यालय से दूर लेकर जाने का काम करती है और वह है उसका आकलन। वह आकलन जो कागज़-कलम के द्वारा किया जाता है, न कि बच्चे के द्वारा किये जा रहे उसके प्रयासों, व्यवहार और दक्षताओं के आधार पर।

जैसा कि अभी तक के पूर्व लिखित तीनों भागों से यह स्पष्ट हो गया है कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा औपचारिक होते हुए भी अनौपचारिक है। क्योंकि इस शिक्षा की सभी पद्धतियां जैसे मांटेसरी, किण्डर गार्डन इत्यादि में स्वाभाविक रूप से खेल-खेल में सीखने पर बल दिया गया है। वर्तमान संचालित पूर्व प्राथमिक शिक्षा के विद्यालयों में यदि सीखने में आकलन की बात करें तो वह अभी भी औपचारिक है जिसमें बच्चों की परीक्षाएं ली जाती हैं और गृहकार्य भी दिया जाता है। यह चलन अनावश्यक और नुकसानदेय है जो अभिभावकों की गलत फहमियों तथा स्कूल पूर्व शिक्षा के बढ़ते व्यवसायीकरण का परिणाम है जो बच्चों के सामान्य विकास और सामान्य रूप से सीखने में बाधक है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, प्रारंभिक बाल्यावास्था शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र में विस्तार से प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को समझाया है और इस आयुवर्ग के लिए आवश्यक विषयवस्तु और मूल्यांकन की आवश्यकता को भी बताया है। नीचे दिए गए गए बॉक्स में विषयवस्तु और मूल्यांकन के संबंध में यह आधार-पत्र क्या है इसे पढ़ते हैं और समझने की कोशिश करते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र

5.4.4 विषयवस्तु (मूलभूत साक्षरता और अंक ज्ञान) और संस्कृति का मिश्रण–पृष्ठ 44

खेल आधारित पाठ्यक्रम के बारे में प्रायः की जाने वाली शिकायतों में से एक यह है कि पढ़ने, लिखने और अंकगणित के शिक्षण पर बल नहीं दिया जाता है। इस अवस्था में बाल मस्तिष्कों को अमूर्त बातों से लादना उचित नहीं होगा। फिर भी अधिक मात्रा में शब्दावली को सीखना, जैसे भारी-हल्का, ज्यादा-कम, थोड़ा-अधिक आदि और गतिविधियों द्वारा अंतर पहचानना अंकों को जानने से पहले की अवधारणा को स्पष्ट करेगा। बार-बार सफलता का अनुभव बच्चे में आत्मविश्वास पैदा करता है जबकि बार-बार की असफलता बच्चे को हीनभावना की ओर ले जाती है। बच्चे यह धारणा खेलों कार्यशीटों तथा अन्य इंद्रिगत संसाधनों जैसे वस्तुओं के साथ खेलना अथवा नाटक में हिस्सा लेने के माध्यम से ग्रहण करते हैं। पूर्व साक्षरता का अर्थ है- आकृतियों एवं आकारों के साथ खेलना, शारीरिक क्रियाकलापों पर दक्षता प्राप्त करने के लिए प्रेरक कौशल को सीखना। कला से संबंधित क्रियाकलाप पूर्व-साक्षरता कार्यों के मुद्दों के साथ जुड़े होते हैं।

बच्चों को अनेक क्रियाकलापों की आवश्यकता होती है जो उन्हें नामों से परिचित कराने,ध्वनियों और शब्दों को पहचानने में सहायता करें। कहानियां, कविताएं सुनने, क्षेत्रीय भ्रमणों पर जाना, चार्टों को देखना, ये सभी सीखने और लिखने में रुचि पैदा करने के आधार हैं।

5.5.3 मूल्यांकन–पृष्ठ 47

निरंतर और संगतपूर्ण निगरानी के द्वारा बच्चों की प्रकृति पर सावधानीपूर्वक नजर रखे जाने की जरूरत होती है। इसके लिए कोई संख्यात्मक मूल्यांकन अथवा स्तरीकृत परीक्षा की सिफारिश नहीं की गई है। वस्तुतः इसकी मनाही है। प्रारंभिक वर्षों में सीखने की उच्चतर कक्षाओं में जाने के लिए बच्चों की परीक्षा नहीं ली जानी चाहिए अथवा मौखिक साक्षात्कार नहीं लिया जाना चाहिए।

शिक्षक कक्षा की दिनचर्या में बच्चे की सहभागिता के बारे में, दूसरे बच्चों तथा वयस्कों के साथ व्यवहार में उनकी योग्यता के बारे में अपना रिकॉर्ड दर्ज कर सकते हैं। विकास के प्रमुख क्षेत्रों में बच्चे की प्रगति का रिकॉर्ड रखने के लिए व्यवहार और कौशल के परीक्षण की एक जाँच-सूची/चेकलिस्ट तैयार की जाए।

जरा सोचिए और बताइए –

1. आपके आसपास पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों के शिक्षण विषयवस्तु में क्या-क्या शामिल किया जाता है?

.....

.....

.....

2. आपके आस-पास पूर्व प्राथमिक स्तर के बच्चों का आकलन किस तरह से होता है? तीन उदहारण लिखें।

.....

.....

.....

3. पूर्व प्राथमिक स्तर पर बच्चों का आकलन कैसे किया जाना चाहिए?

.....

.....

.....

4. आपके विचार से आकलन की प्रक्रिया में अभिभावकों का सहयोग कैसे लिया जा सकता है?

.....

.....

.....

चलिए समझते हैं कि आकलन (Assessment) और मूल्यांकन (Evaluation) है क्या?

आकलन और मूल्यांकन दोनों का उद्देश्य बच्चों की अभिव्यक्ति, क्षमता, अनुभूति आदि का मापन करना है। आकलन एक संक्षिप्त प्रक्रिया है और मूल्यांकन एक व्यापक प्रक्रिया है। मूल्यांकन किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में किसी भी पक्ष या विपक्ष के विषय में सूचना एकत्र करना, उसका विश्लेषण करना और व्याख्या करना है।

आकलन (Assessment)	**मूल्यांकन** (Evaluation)
किसी व्यक्ति या किसी चीज के बारे में जानकारी प्राप्त करने, समीक्षा करने और उपयोग करने के तरीके को आकलन करना यानि Assessment कहते हैं। आकलन का उद्देश्य है, जहां आवश्यक हो, सुधार किया जा सके।	मूल्यांकन किसी व्यक्ति या किसी चीज को मापने या अवलोकन करने की एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है, यह एक व्यक्ति के प्रदर्शन, पूर्ण परियोजना, प्रक्रिया या उत्पादकता का प्रदर्शन करता है, ताकि इसकी कीमत या महत्व निर्धारित किया जा सके। मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है और शिक्षण प्रक्रिया का अभिन्न अंग है।
आकलन सीखने को प्रेरित करता है। यह बच्चों को उनकी प्रगति से अवगत कराता है। आकलन में ग्रेडिंग की भूमिका होती है।	मूल्यांकन बच्चों में अपेक्षित व्यवहार एवं आचरण परिवर्तन की जाँच करता है। यह बच्चों द्वारा ग्रहण की गई कुशलताओं, योग्यताओं आदि की जांच करता है। यह उपचारात्मक शिक्षण प्रदान करता है। साथ ही अध्ययन और अध्यापन दोनों का मापन करता है।

आकलन मूल्यांकन की निर्णयात्मक और व्यापक प्रक्रिया है। लगातार बच्चों की क्षमता, योग्यता को जांचना एवं परखना आकलन कहलाता है। आकलन बच्चों की क्षमताओं, रुचियों, अभिवृत्ति/कौशल का गुणात्मक निर्णय करता है। इसके द्वारा बच्चे की विशेषता अथवा कमी की जानकारी मिलती है जिसके द्वारा उसमें सुधार कर प्रगति की ओर अग्रसर किया जा सकता है। बच्चे की आयु अनुसार सीखने के विकास के सभी पहलुओं के मापन के लिए आकलन की आवश्यकता होती है जिससे प्रत्येक बच्चे के विकास की क्रमिक जानकारी उपलब्ध हो सके तथा अभिभावकों को बच्चे के विकास से अवगत कराया जा सके। यह बच्चों की प्रगति के बारे में जानकारियों का एकत्रीकरण एवं विश्लेषण करने के साधन हैं। आकलन दर्शाता है कि बच्चे क्या जानते, क्या समझते हैं? क्या कर पाते हैं? और शिक्षक होने के नाते उन्हें हमें क्या सिखाना है? साथ ही यदि बच्चे किसी एक या दो विधा से नहीं सीख पा रहे हैं तो शिक्षक को अपने सिखाने के तरीकों में क्या बदलाव करना है ?

इस तरह आकलन सीखने में मदद करता है। साथ ही शिक्षक को अपनी योजना बनाने में भी मदद करता है। यदि यह आकलन भय रहित होता है तो यह बच्चों में आत्मविश्वास को बढ़ाता है। परन्तु यदि आकलन की इस जटिल प्रक्रिया में बच्चे को कम आंका जाता है और अपशब्दों का उपयोग आम बोलचाल में किया जाता है तो यह आकलन बच्चे को सीखने से दूर धकेलता है। शिक्षक को आकलन द्वारा यह पता चलता है कि बच्चों की भागीदारी, रुचि और जुड़ाव और अन्य क्षेत्रों में सीखने का स्तर कैसा है।

प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा के अंतर्गत शिशुओं के उचित विकास के लिये वातावरण बनाने के बाद आवश्यक है कि उनके क्रमिक विकास का नियमित रूप से अवलोकन किया जाए। यह अवलोकन इस तरह होना चाहिए कि बच्चे को यह एहसास न होने पाए कि उसकी निगरानी की जा रही है। इसके लिए सबसे अच्छा तरीका यह है कि बच्चे के द्वारा माह भर की जाने वाली गतिविधियों का नियमित रूप से अवलोकन किया जाए। इस हेतु पोर्टपोलियो, चेकलिस्ट, रूब्रिक्स, डायरी, स्वास्थ्य कार्ड, स्वाभाविक अवलोकन का उपयोग किया जा सकता है।

आकलन के पश्चात बच्चों की प्रगति का प्रतिवेदन (रिपोर्ट कार्ड) अभिभावकों के साथ साझा किया जाना चाहिए जिससे अभिभावकों का सहयोग और जिम्मेदारी को सुनिश्चित किया जा सके। प्रगतिपत्र में बच्चों के विकास के विविध पहलुओं जैसे स्वास्थ्य/ शारीरिक कुशलता, खेलों में दक्षता, सामाजिक कौशल, कला व हस्तकला में दक्षता पर गुणात्मक कथन दिये जा सकते हैं जिससे शैक्षिक सरोकारों का एक समग्र आकलन हो सके।

नेतृत्वकर्ता की कुछ तैयारी –

1. बच्चों के अवलोकन हेतु बिन्दुओं को लिखिए जिससे माता-पिता घर में बच्चों का आकलन कर सकें।

.....

.....

.....

2. पूर्व प्राथमिक शिक्षा में बच्चों का आकलन पेपर-पेंसिल से हो। क्या इस बात से आप सहमत है? यदि हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों? अपने विचार लिखें।

.....

.....

.....

नेतृत्वकर्ताओं हेतु सुझावात्मक (आकलन पत्रक) प्रगति पत्रक का स्वरूप

मांटेसरी पद्धति के अनुसार बच्चों का सतत आकलन विकास के विभिन्न क्षेत्रों में तीन सत्र (तिमाही) में किया जाता है। प्रत्येक सत्र के बाद अभिभावकों की एक सभा करके बच्चों की प्रगति पर चर्चा की जाती है। यदि किसी क्षेत्र में बच्चा रुचि नहीं ले रहा है तो अभिभावकों के सहयोग से तथा उसकी समस्या को समझकर समाधान के प्रयास किये जाते हैं।

प्रगति पत्र के कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दु

1. प्रथम पृष्ठ पर बच्चे की सम्पूर्ण व्यक्तिगत जानकारी।
2. माता-पिता द्वारा बालक की आदतों और क्रियाकलापों पर जानकारी देना।
3. विकास से संबंधित मापदण्ड जिन पर बच्चों का सतत आकलन किया जाता है-शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, ज्ञानेन्द्रियों के विकास, भाषा, गणित में योग्यता तथा व्यवहारिक कार्य आदि।
4. शिक्षक की टीप।

यद्यपि हम मॉड्यूल के तीसरे भाग में भाषा व गणित शिक्षण के संबंध में काफी कुछ बातचीत कर चुके हैं पर एक नेतृत्वकर्ता होने के नाते यह सोचिए कि -

1. सीखने सिखाने की प्रक्रिया में विकास के विभिन्न क्षेत्रों की गतिविधियों तथा भाषा-गणित में आकलन किस प्रकार किया जाए?

.....

.....

.....

2. आकलन के दौरान किन-किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए?

.....

.....

.....

हम सभी जानते हैं कि आकलन द्वारा बच्चों की प्रगति का अवलोकन किया जाता है ताकि उनके द्वारा की जाने वाली त्रुटियों की पहचान की जा सके एवं उन्हें सुधार हेतु अवसर दिया जा सकें। इस हेतु कुछ सावधानियाँ जो शिक्षक को रखनी होंगी -

- गतिविधियों, साधनों के प्रयोग को शिक्षक पहले स्वयं करके दिखाएं उसके बाद बच्चों से धीरे-धीरे करवाया जाए। यदि बच्चों से ना बने तो उनकी सहायता की जाए।
- बच्चों को क्रियाकलापों को दोहराने हेतु कई अवसर दिए जाएं, जब तक वे उसमें कुशल ना हो जाएं।
- गतिविधि के दौरान शिक्षक को सतत अवलोकन करते रहना चाहिए। साथ ही डायरी में नोट करना चाहिए कि बच्चे क्रियाकलापों को किस तरह कर पा रहे हैं।
- उनकी ज्ञानेंद्रियों की नियंत्रण क्षमता को देखें। भाषा में वे किस तरह अभिव्यक्त कर रहे हैं, स्पष्ट बोल पा रहे हैं कि नहीं, शब्दों के बीच विभिन्न ध्वनियों को पहचान पा रहे हैं या नहीं।
- गणित के प्रतीकों, अंकों, आकृतियों को पहचान पा रहे हैं।
- शून्य की पहचान, इकाई-दहाई की समझ बना पा रहे हैं।
- वस्तुओं को गिन पाना, समान आकृतियों की पहचान, वर्गीकरण कर पा रहे हैं या नहीं।

उपरोक्तत सभी बिन्दुओं पर नेतृत्वकर्ता/ शिक्षकों को बड़ी धैर्यता के साथ बच्चों के साथ नम्र व्यवहार करते हुए अवलोकन करना चाहिए। इस प्रकार शिक्षक को यह देखना है कि बच्चे प्रारंभिक स्कूल के हिसाब से पढ़ने और गणित संबंधी निपुणताओं को हासिल कर पा रहे हैं।

शिक्षक यह आकलन कर सकते हैं कि बच्चे ज्ञानेंद्रियों के साधनों के प्रयोग के दौरान, इंद्रिय अनुभव को तीव्र करके अपने अनुभव के क्षेत्र को बढ़ा रहे हैं या नहीं। वास्तविकता के साथ संबंध जोड़ पा रहे हैं या नहीं। चीजों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देख पा रहे हैं। उनकी शारीरिक गतियों में सुधार हो पा रहा है। उनकी एकाग्रता में विकास हो पा रहा है और नीति और सुंदरता भाव को बढ़ा पा रहे हैं। इसके साथ ही बच्चों की इंद्रियों में यदि दोष है तो उसको भी जानने में सहायता प्राप्त होगी। दैनिक जीवन के साधनों का अभ्यास करते समय अध्यापक इस बात का आकलन कर सकता है कि बालक चीजों को उन्हीं दैनिक साधनों के लिए प्रयोग में लाएँ जिनके लिए वह नियुक्त की गई है।

समेकन

इस भाग में हमने देखा कि पूर्व प्राथमिक शिक्षा में आकलन कैसे किया जाए। खेल-खेल में स्वतंत्र रूप से शिक्षकों को आकलन करना होगा। शिक्षक को निरपेक्ष भाव से आकलन करना चाहिए तभी बच्चों की वास्तविक प्रगति पता चल सकेगा। यह शिक्षक के प्रयासों की सफलता-असफलता का दर्पण है। बच्चे की प्रगति के मार्ग में बाधाओं को पहचान कर अनुगामी क्रियाओं को संचालित करना आवश्यक होगा। यदि बच्चा स्पष्ट उच्चारण नहीं कर पाता, अपने साथियों से हिल-मिल नहीं पाता, खेलता नहीं, शर्मीला है तो ऐसे बालकों की रुचि, आवश्यकता तथा क्षमता के अनुरूप शिक्षण योजना बनानी होगी। आकलन करते समय शिक्षकों को सावधान एवं सतर्क रहना होगा। शिक्षक को एक डायरी रखनी होगी उसमें प्रतिदिन बालक के व्यवहारों को नोट कर सकें। साथ ही नेतृत्वकर्ता प्रधानाध्यापक को भी सतत निगरानी एवं सहयोग देना अपेक्षित है।

आमतौर पर हम इस उम्र में बच्चों के विकास हेतु उनके स्वास्थ्य और पोषण पर ही ज्यादा ध्यान देते हैं जबकि बच्चे के संपूर्ण विकास और सीखने के कौशल के विकास पर अधिक ध्यान देना अपेक्षित है। क्योंकि यही वह समय है जो उनके भविष्य की नींव को तैयार करता है जिससे वे आगे चलकर प्राथमिक शिक्षा के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहज हो पाते हैं। इस अवस्था में बच्चों में असीम ऊर्जा होती है, उनकी इस ऊर्जा का उपयोग करने के लिए उन्हें विभिन्न गतिविधियों में शामिल होने के अवसर दिये जाने चाहिए, ताकि उनमें आत्मविश्वास, साझेदारी, अभिव्यक्ति की क्षमता जैसे सामाजिक-मानसिक गुणों का विकास हो सके।

इसी तरह शालाओं में नेतृत्वकर्ता के समक्ष जो चुनौतियां आ सकती हैं उस पर भी हम विस्तार से बात कर चुके हैं और इस हेतु एक नेतृत्वकर्ता को सभी क्षेत्रों की नियमित मॉनीटरिंग करना होगी। साथ ही सीखने-सिखाने के पर्याप्त अवसर एवं संसाधनों की व्यवस्था भी करनी होगी।

जैसा कि कई शोध बताते हैं, जो बच्चे शुरुआती कक्षाओं में पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाते हैं उनके आगे जाकर ड्राप आउट हो जाने की सम्भावना बढ़ जाती है।

इस अवस्था में बच्चों को स्कूल की औपचारिक दिनचर्या से धीरे-धीरे परिचित होने तथा साक्षरता के मूलभूत सिद्धांतों (पढ़ने-लिखने), संख्या ज्ञान (गणित की संकल्पनाओं को समझना और उनका प्रयोग तथा सामाजिक और प्राकृतिक वातावरण की व्यवस्थित जानकारी के बारे में सीखने के लिए सहायता की आवश्यकता होती है)। ऐसे में शिक्षकों के लिए जरूरी है कि वे अपना लक्ष्य, कक्षा में परस्पर व्यवहार के लिए रणनीतियाँ तैयार करें, जो शिक्षक और बच्चों के बीच संबंधों को बेहतर बनाने में मदद करेगा।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा 2005, प्रारंभिक बालायावास्था शिक्षा, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र

शिक्षकों के लिए लक्ष्य-पृष्ठ 49

- विकास के सभी क्षेत्रों में ज्ञान और कौशल का विकास करें।
- बच्चों के कैसे सीखें के बारे में सिखाएं।
- सीखने के वैयक्तिक पैटर्न और समय का सम्मान करें।
- वैयक्तिक अंतरों और सीखने की शैलियों को समझें।

कक्षा में परस्पर व्यवहार के लिए रणनीतियां (युक्तियां)-पृष्ठ 49

- मजबूत अनुभव प्रदान करें।
- आपसी व्यवहार से सिखाएं।
- सहयोगी शिक्षण को प्रोत्साहन दें।

- एकीकृत शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए परियोजना पद्धति का प्रयोग करें ।
- बच्चों की सक्रिय सहभागिता के लिए कार्य करें ।
- भाषा पढ़ाने के लिए नाटकों का प्रयोग करें ।

शिक्षक और बच्चों के बीच संबंध-पृष्ठ 49

- बच्चों को उनकी भावनाएं अभिव्यक्त करने का मौका दें।
- उनके संकट और जीत को साझा करें?
- उत्तरदायी वयस्कों की बच्चों तक पहुंच।

सन्दर्भ :

1. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005-3.10.1-प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा-पृष्ठ 74
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986-भाग 4
3. कोठारी आयोग की रिपोर्ट-भाग 2
4. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-भाग 1 व 2
5. पूर्व प्राथमिक पाठ्यचर्या- NCERT 2019
6. भारत का संविधान-राज्य के नीति निदेशक तत्व
7. Manual for pre primary class_LLF & UNICEF
8. Guideline for Design and Implementation of Early Learning Programmes_LLF& UNICEF
9. मारिया मॉन्टेसरी एवं शिक्षा के सिंद्धात
   Link – https://www.scotbuzz.org/2017/05/maria-montessori.html
10. माता मॉन्टेसरी के विचार व विधि-प्रो. एस.पी. कनल और पी.एस. कनल
11. शिक्षक संदर्शिका- शिशु शिक्षा प्रकोष्ठ राज्य शिक्षा संस्थान, भोपाल म.प्र.
12. प्रांरभिक बाल्या वस्थु शिक्षा का राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र
13. निष्ठा-मॉड्यूल क्रमांक 15
14. https://hindi.edufever.com

जैसा कि मॉड्यूल के पहले भाग की शुरुआत में हमने कुछ सवालों को पढ़ा था और उसके सही जवाब पर निशान (✓) भी लगाया था। चलिए अब जांचते हैं कि जिन जवाबों को हमने चुना था वह सही हैं या नहीं।

1. प्रश्न 1 - सही विकल्प 3
2. प्रश्न 2 - सही विकल्प 4
3. प्रश्न 3 - सही विकल्प 3
4. प्रश्न 4 - सही विकल्प 4
5. प्रश्न 5 - सही विकल्प 2
6. प्रश्न 6 - सही विकल्प 1
7. प्रश्न 7 - सही विकल्प 1
8. प्रश्न 8 - सही विकल्प 3
9. प्रश्न 9 - सही विकल्प 2
10. प्रश्न 10 - सही विकल्प 4

लेखक का नाम
स्वाती बरखेड़कर (डाईट जबलपुर)
राधा मिश्रा (डाईट जबलपुर)
शीबा खान (शिक्षक पीपीटीआई)
प्री प्राईमरी ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, जबलपुर, म.प्र.

मेंटर/ एक्सपर्ट का नाम
ज्योति भाटिया
पूर्व यूनिसेफ सलाहकार
फ्रीलान्स कंसलटेंट, भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल- +91-9977464977
ई मेल- jyotibhatia81@gmail.com

❑ ❑ ❑